RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-08
August-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

कैम्ब्रिज विचारधारा और भारतीय इतिहास लेखन

डा0 मनीषा कुमारी

पी0 एच0 डी0, इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

राष्ट्रवाद के युग में भारतीय राजनीति को पुर्नव्याख्यायित करनेवाले कैम्ब्रिज के इतिहासकारों के समूह को कैम्ब्रिज स्कूल के नाम से जाना गया। उनके अनुसार साम्राज्यवाद और राष्ट्रवाद के बीच किसी प्रकार का अन्तर्विरोध नहीं था। उनके अनुसार स्थानीय हित और विभिन्न गुटों के बीच विद्वेष भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास की प्रमुख विशेषताएं थीं। इस प्रकार के स्थानीय मनमुटावों के बावजूद यदि भारतीय राष्ट्रवाद का उदय हुआ तो इसका कारण यह था कि अंग्रेज शासन ने सरकार को केन्द्रीयकृत किया और उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में राजनीतिक प्रतिनिधित्व की शुरूआत की। स्थानीय मामलों में सरकार के हस्तक्षेप के फलस्वरूप स्थानीय राजनीतिज्ञ केन्द्र की ओर अग्रसर हुए विरोधाभास यह है कि भारतीय राष्ट्रवादी सरकार की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ सत्ता ने केन्द्रीयता भारतीय राष्ट्रवाद की इस व्याख्या के केन्द्र में थी। यह विचार लोकेलिटी, प्रोविन्स ऐंड नेशन : एस्सेज ऑन इंडिया पॉलिटिक्स, 1870 से 1940, शीर्षक से संग्रहित कैम्ब्रिज इतिहासकारों के लेखों के संकलन के रूप में उपलब्ध है। इसे जॉन गेलेघर, गोर्डन जॉनसन और अनिल सील ने सम्पादित किया था और 1973 में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित किया गया। इसे कैम्ब्रिज जनरल मॉडर्न एशियन स्टडीज के अंक के रूप में और पुस्तक के रूप में अलग से प्रकाशित किया गया। आलोचकों ने इसके लेखकों पर भारतीय राष्ट्रवाद को बदनाम करने का आरोप लगाया और इस समूह को कैम्ब्रिज स्कूल या सिर्फ कैम्ब्रिज के नाम से पुकारा गया। इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद इस पर तीखी बहस हुई और भारत के मार्क्सवादी और उदारवादी इतिहासकारों ने इस अभिधारणा की कटु आलोचना की। निस्संदेह कैम्ब्रिज स्कूल का भारतीय इतिहास-लेखन पर प्रभाव पड़ा।

इसके पहले 1960 के दशक में इतिहास-लेखन की दो विचारधाराएं सामने आई। एक ने मार्क्सवादी स्कूल का समर्थन किया और दूसरे ने पश्चिम के सामंत सिद्धान्त को आगे बढ़ाया। इसी संभ्रांत विचारधारा से कैम्ब्रिज स्कूल का विकास हुआ। कैम्ब्रिज के सिद्धांतों को समझने के लिए 1960 के दशक में हुए बहसों से रू-ब-रू होना आवश्यक है। इस बहस में कालांतर में कैम्ब्रिज स्कूल को भी शामिल किया गया।

संक्षेप में बहस तीन सवालों के इर्द-गिर्द घूमता रहा। सबसे पहला यह कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत में अंग्रेजों के राज में आधुनिक राजनीति की धुरी क्या थी ? क्या राजनीति अर्थशास्त्र से परिचालित थी या यह अंग्रेजी शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और अंग्रेजों द्वारा किए गए अन्य संस्थागत प्रयोगों का प्रतिफलन था ? मार्क्सवादियों का मानना है कि यह अर्थशास्त्र से प्रेरित था कि भारतीय उपमहाद्वीप में राजनीतिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त इकाई क्या है ? यह एक सिद्धांतकारों के अनुसार यह क्षेत्र थे जो ब्रिटिश भारत में होनेवाले राजनीतिक परिवर्तन के केन्द्र बिन्दु था। इसके अलावा इस बात को लेकर भी मतभेद था कि किस सामाजिक समूह को केन्द्र में रखा जाए। क्या वर्ग और वर्ग संघर्ष पर केन्द्रित किया जाए या अंग्रेजी पढ़े लिखे शिक्षित वर्ग और राजनीतिक प्रतिनिधित्व पाने की होड़ में लगी विभिन्न जातियों और समुदायों के टकराव को सामने रखकर बातचीत की जाए ? स्वाभाविक तौर पर मार्क्सवादी इतिहासकारों ने वर्ग पर संभ्रांत इतिहासकारों ने जाति, समुदाय और पश्चिमी शिक्षा से युक्त संभ्रांत वर्ग पर ध्यान केन्द्रित किया।

कैम्ब्रिज स्कूल का उदय संभ्रांत सिद्धांत से हुआ, पर यह इसकी एक शाखा थी। इसलिए उनकी व्याख्या संभ्रांत सिद्धांतकारों से काफी प्रभावित है। कैनबेरा, ससेक्स और कैम्ब्रिज जैसे पश्चिमी विश्वविद्यालयों के इतिहासकारों ने भारत और सोवियत संघ में मार्क्सवादी इतिहास-लेखन की प्रतिक्रिया में अपनी व्याख्याएं प्रस्तुत की। भारतीय राजनीति में अंग्रेजी पढ़े लिखे शिक्षित संभ्रांत वर्ग की भूमिका पर बल देने के लिए लगातार तीन किताबें सामने आई : जे.एच. ब्रूमफिल्ड, एलिट कनफ्लिक्ट इन ए प्लूरल ऑफ इंडियन नेशनलिज्म : कॉम्पिटिशन ऐंड कोलाबरेशन इन द इमरजेंस ऑफ इंडियन नेशनलिज्म : कॉम्पिटिशन ऐंड कोलाबरेशन इन द लेटर नाइनटीन्थ सेंचुरी। इसमें मार्क्सवादियों के खिलाफ तीन बातें कहीं गई। सबसे पहलेयह कि आधुनिक

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

राजनीति के पीछे, जिसमें राष्ट्रवादी राजनीति भी शामिल थी, मुख्य प्रेरक शक्ति आर्थिक बदलाव नहीं था बल्कि अंग्रेजों द्वारा किया गया संस्थागत नयापन और परिवर्तन था। अनिल सील ने अंग्रेजी शिक्षा द्वारा किया गया। अनिल सील ने अंग्रेजी शिक्षा द्वारा मुहैया कराए गए संस्थागत अवसरों खासतौर पर छोटी सरकारी नौकरियां पाने और कानून, पश्चिमी चिकित्सा, पत्रकारिता और अध्यापन के क्षेत्र में एक नई शुरूआत पर बल दिया। जॉन ब्रुमफिल्ड के अनुसार इस संस्थागत अवसर खासतौर पर छोटी सरकारी नौकरियां पाने और कानून, पश्चिमी चिकित्सा, पत्रकारिता और अध्यापन के क्षेत्र में नई शुरूआत पर बल दिया। जॉन ब्रुमफिल्ड के अनुसार इस संस्थागत अवसर से राजनीतिज्ञों ाक एकनया दल तैयार हुआ। नया संविधान बना, प्रतिनिधि चुनकर आने लगे और नए प्रकार की सरकार का निर्माण हुआ। दूसरी यह कि राष्ट्र के बजाए क्षेत्र पर आधारित व्याख्या और प्रत्येक क्षेत्र में परम्परागत संस्कृतियों पर विशेष बल दिया गया। इस क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में ही संभ्रांत सिद्धांतकारों ने संस्थागत परिवर्तनों द्वारा किए गए राजनीतिक परिवर्तनों की बात कही। तीसरे, वर्ग और वर्ग संघर्ष आधारित व्याख्या के लिए यह बात कही गई कि अंग्रेजी शिक्षा और विधायी प्रतिनिधित्व का अवसर पाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों तथा जाति और समुदायों में होड़ मच गई।

अनिल सील के शोध-प्रबंध इमरजेंस ऑफ इंडियन नेशनलिज्म (1968) का निर्देशन कैम्ब्रिज के जॉन गेलेघर ने किया था। इस शोध-ग्रंथ में जॉन गेलेघर की अभिधारणा को ही आगे बढ़ाया गया। अनिल सील के प्रथम पीढ़ी के छात्रों खासतौर पर जूंडिथ ब्राउन, जिन्होंने गांधीज राइज टू पावर लिखी, ने भी इस परम्परा को आगे बढ़ाया। इनके अनुसार अंग्रेजी पढ़े लिखे संभ्रांत वर्ग के लोग सबसे पहले बंगाल, बम्बई और मद्रास के अल्पसंख्यक उच्च जाति के थे और पिछड़ी जातियों और क्षेत्रों की राजनीति इस अंग्रेजी राष्ट्रवाद के खिलाफ अल्पसंख्यकों का प्रतिरोध था। हालांकि बाद में जॉन गेलेघर और उनके विद्यार्थियों ने अपने विचार में तेजी से परिवर्तन किया और कैम्ब्रिज स्कूल इसी बदले हुए विचार का प्रतिफलन है।

जॉन गेलेघर ने रोनाल्ड रॉबिन्सन के साथ पहले अफ्रीका एंड दि विक्टोरियन्स (1961) शीर्षक पुस्तक लिखी थी जिसमें 1860 के दशक के आंरभ में साम्राज्य अध्ययन की आलोचनात्मक दृष्टि से देखने का काम किया। संक्षेप में गेलेघर और रॉबिन्सन ने यह कहा कि साम्राज्यवाद यूरोप में नई आर्थिक शक्तियों का प्रतिफलन नहीं था बल्कि अफ्रीका और एशिया में स्थानीय कारणों से हुए राजनीतिक ह्रास का परिणाम था। देसी समाजों के आन्तरिक राजनीतिक कलह पर प्रकाश डाला और खासतौर पर जाति तथा विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और जातियों के बीच अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने की होड़ को जायज बताया। 1970 के दशक के आरंभ में जॉन गेलेघर, अनिल सील और गोर्डन जानसन के इर्द-गिर्द शोधार्थियों का एक नया समूह खड़ा हुआ जिन्होंने महाराष्ट्र की राजनीति पर शोध किया था। इनका शोध अनिल सील और जुडिंथ ब्राउन से काफी मिलता जुलता है। यह समूह कैम्ब्रिज स्कूल के नाम से जाना गया। इस समूह ने अपने को पहले से चले आ रहे संभ्रांत सिद्धांत से अलग किया और जारी बहस के सवालों के नए जवाब पेश किए। हालांकि इनका भी यह मानना था कि राष्ट्रवाद मूलतः सत्ता प्राप्त करने का एक खेल था।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. डी.डी. कोसाम्बी, ऐन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन, 1985
2. रोमिला थापर, द कंट्रिब्यूशन ऑफ डी.डी. कोसाम्बी, टू इंडोलॉजी, रोमिलाथापर, कल्चर पाट्टस : एस्सेज आर, पाम दत, इंडिया टूडे, 1940
3. ए.आर. देसाई, सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनजिम्म, बम्बई, 1948
4. हरबंश मुखिया, द फ्यूडलिज्म डिबेट, 2000
5. बिपिन चंद्र, इंडियाज स्ट्रगल फॉर इन्डिपेन्डेन्स, 1857
6. सुमित सरकार, ए क्रिटिक ऑफ कोलोनियल इंडिया, 1985
7. सुशोभन, सरकार, ऑन द बंगाल रोनेसेन्स, 1979

© RRIJM 2015, All Rights Reserved